श्रीपरमात्मनेनमः॥अथमंगलाचर्ण॥
दोहा॥प्रथमवंदिपरब्रह्म॥परमआनंदस्वरूप॥
दुतियवंदिगुरदेवदियौजिहिज्ञानअनूप॥त्रि
तियवंदिसबसंतजोरिकरतिनकेआगय॥मनव
चकायप्रणामकरतनयप्रमसवम्रागय॥१
हिभांतिमंगलाचर्णकरिसुंदरग्रंथवषाने
ये॥तहाविघ्नकोउन्यापजय॥यहनिहच्चवक
रिमांनियें॥२॥उक्तवाहरण॥दोहा॥ब्रह्मप्रणम्य
प्रणम्यगुरु॥पुनिप्रणम्यसबसंत॥करतमंग
लाचारइम॥नासतविघ्नअनंत॥२॥उदेव्रह्मगु
रसंतग्रह॥वस्तुविराजतएक॥वचनविलास
हिभागत्रय॥वंदनपावविवेक॥३॥
वर्नन॥वरन्यौचाहतग्रंथकौंकहाबुद्धि

मम्मद्रुद्र अति अगाध मुनि कहत हैं सुंदर ज्ञान
समुद्र तान समुद्र ग्रंथ अब
भाषो वकृत भांति मन मांहि अनिला पैं यथ
सक्ति हूं बोले निम्नुनाऊं जो सद्गुर पहि आग
पाऊं है
ह अति गंभीर ज्ञान दहर ज्ञान दका मध्य तु
या कौ नीर सकल पदार्थ मध्य है
जाति जिती सब कुंदनि की वक्र सीप मई है
सागर मांही है तिन मैं मुक्ता फल अर्थ लहै जन
कै हित सो अव गाही सुंदर पैठि सकै नहिं जीव
तैं दडुव की मर जीव हि जाहि जे नर ज्ञान कर
वत है अति गर्व नर तिन की गति नांहि
जे गुरु
जो हैं जिनके संतन की नाव
कबित के जगत सौ हैं जिनकै संतन की नाव

वैजसासुन्दासरहतहैं॥ गंनतनकोऊरंकनरा
व॥ बादविवादकरतनंहींकवहूवस्तुजानिवे
कौअतिचाव॥ सुंदरजिनकीमतिहैऐसी॥ तेप
ठहिगयादरियाव॥ ७ ॥ [illegible] ॥ सूतक
लित्रनिजदेहआपुकौबंधनतैं॥ छूटौकौनउ
पायइहैउरअंतरआनतं॥ जन्ममरनकीसंक
रहैनिसदिनमनमाही॥ चतुरासीकेदुखन
हींकछुवरनेजाहीइहिभांतिरहैसोचतसदा॥ सं
तनिकौंपूछतफिरै॥ कोहैऐसोराडुरकही॥ जे
मेरौकार्यकरै॥ ८ ॥ [illegible]
चौपई॥ [illegible]॥ गुरदेवविनानहीमारगसुझय॥
गुरविनभक्तिनजानै॥ गुरदेवविनानहीसंशयभा
गय॥ गुरविनलहैनजानै॥ गुरदेवविननहीका
मैहोई॥ लोकबेदयोगावै॥ गुरदेवविनानहीस

उ तिकोई गुरगोवंदवताव
गुरदेवविनानहीआगाजगो गुरदेवविनानहोप्री
गुरदेवविनानहीसुदृहन्दे गुरदेवदे
तिलगो गुरदेवविनानही गुरकेप्रस
नानहीमोक्षपद गुरकेप्रसादअवडख
दबुद्धिउत्तमदशाकोंग्रहै गुरकेप्रसादप्रेमप्रीतिहुअधिक
विसराईये गुरकेप्रसादरामनामगुनगाईये गुरके
वाढै गुरकेप्रसादजुगतिजानै गुरकेप्रसाद
प्रसादसवजोगकी सुंदरकहत गुरदेवजो
पूंनमैंसमाधिलाईये तिनकेप्रसादतत्वज्ञानपुनिपाई
कृपालहोहि गुरकेसरनैआइहै तवहीअप
ये कैसैरहे प्रगटहोइजवभ
जैसालों तिमरकहोकैसै चितवत
न सुहिदेय क्रोधरहि
लैयलीननित्यसीतलाहि

नदीजै॥३॥ दूबीदीनप्राणीकलैब्रह्मवांणी॥ रि
दैप्रेमग्रीजैअमैदांनदीजै॥ ॥ जतीजैनदेपे
सवैमेषपेषेतुमैं चितधीजैअमैदांनदीजै
॥ ॥ फिरयोदेसदेसाकिरद्ररिकेसानहीयो
पतीजै॥अमैदांनदीजै॥ ॥ गयोआयुसारे
मयोसोचसारोबथादेहछीजैअमैदांन
दीजै॥७॥ करोमोजऐसीरहेबुद्धिवैसीप्र
था नित्यपीजैअमैदांनदीजै॥२५॥ इति श्री
[illegible]
दे॥ अथसंवादगुरदेव देषिदीनतासिष्यकी स
वैवताऊंमेव जोरजोतपूछिहै
[illegible] करजोरिषमैसिष्य
रिपुण्णमतवप्रश्नकरीमनधरिविरांम होके
नकौनयहजगतआहि जन्म

...दस्त...

...कुत्र न्हताजो ...

...रूपमान...

...स्वात...

...तिहिदहके संजोगकजी

...रच्या ... यहभ्रमछतो संचार

...काल्या ... पुनिज...

...प्रमानिये ...

...जांनिये

...प्रकरिव्योजांनिये

...प्रमहीको प्रम...

...मगजले...

[illegible]

नयं हसंदेहजागैसोवैकौंनसो॥येतोजडमनदे
हे॥भ्रमकोभ्रमकैसेंगयौ॥२६॥श्रीगुरुरुवाच॥
कुंडलियाछंद॥सिष्यकहांलौंपूछिहैमैतोग्रस
रहीन॥तवलगचिंतनआइहै॥जवलगहृदयमली
न॥जवलगहृदयमलीनयथार्थकैसेंजानैं॥भ्रमै
त्रिगुनमयवहिआपुनाहिनयहिपहिचानैं॥क
हिवेश्रुनिवेकरुं॥ज्ञानउपजैनजहांलौं॥मैंतैं
उत्तरदयोशिष्यपूछिहैकहांलौं॥इतिश्रीसुंदर
दासेनविरचितःज्ञानसमुद्रेगुरुसिष्यलक्षनना
मप्रथमोल्लासः॥१॥सिष्यउवाच॥दोहाछंद॥स्वा
मीहृदयमलीनमम॥शुद्धकवनविधिहोइ॥सोइ
कहौउपाइअव॥संशयरहैनकोइ॥१॥श्रीगुरुरुवा
च॥चौपईछंद॥सुनुसिष्ययेतीनिउपाई
जोगहठजोगकराई

ल्यावै तवतंसुध्धस्वरूपाहपावै
अवमतिकेहैगुरुकैप्रकारहु
तोगअंगपांऊं विचारा पुनिसांख्यसुजोगवत
वनाथ भवसागरबूडतगहेकुलाय
दशमीप्रेमलक्षणाकहिए सोप
कारहैताकेभेद। परा भगतिहैताकेआगे स्वक
वैजाकै निर्वेद। उत्तममध्यम निष्टतीनिवि
सेव्यनहोइविछेद॥ धिसुंदरइनतेमिटहैभेद॥
निकहैगुरतिनमि
नवधाभक्तिवषानि कोनप्रश्नावकुसीसहायध
प्रेमलक्षनाकोनप्रकाराके
नकोर प्रेमलक्षनाकैप्रभुकोनप्रकारायऊद
रिपराभगतिकोभेवकहैप्रभुनिरधारायऊद
उतिमकोमध्यकवनकोनिष्टनिरधाराहै जव
या स्पंधुमोसोंकहऊ तुमसमाननहिकोइहै

कृपाकयाह्विहिद्दे सिहो तवमसकार्यहोइहै
सुनि ऊंनदधी
गति विधानं सुदनकी रतनसुमरणजानप
हसेविनेह रतनवदन हुलसमोद सरवत्सुस
ह्यो [illegible]
इतैनदश्रंगनिजानि स
हित श्रुतनामकी जिय सव [illegible]कीरघुदानि
मतिकनिहायहकरी
[illegible] वनप्रश्नकौन सोकहिये कीरतन
कौनविधिलाहिके जुसमरनकौनकहिदेज
चरनसेवाधुनीकि [illegible] श्रइनाकौनविधि
होई वंदनाकीगुरुसोई जुदासयसरवतप
हिचानौ निवेदन आतमाजानौ
यैन [illegible] नगेवमोहि श्रुनुक्रमुसोकहौ
तुमहुपालगुरुदेवपूछतावत्सगमसानिये
[illegible] सिष्पतोहिक

...त्लावै तवतंशुध्धस्वरूपादिक ... गुरुके प्रकारहै

श्रवनै किं कहे पुनि सांख्यसु जोगवत

जोगअंगपांचे विचार ... कहे तगहेकुहाथ

वनाथ भवसागरखूडतगहेकुहाथ

... प्रेमलछनाकहि रसाप

... दरसामी प्रेमलछना आगे स्वक

कारहै ताके भेद ... भगति है ताके आगे निवृति निवि

वैजोके निर्वेद परा ... उत्तम मध्यम

सेवनहोइ विछेद ॥ ... तेमिटिहै षेद॥

धिसुंदर इन तैमिटिहै ... निकहे गुर तिन्नमि

नवधा भक्ति वपानि कहे गुरु ... सीसहाय

... प्रेमलछनाकौ नसुनावकु सीसहाय

नकौर प्रेमलछनाकौ नप्रकारा क

रिपराभक्तिकौ भेव कहो प्रभु कौन प्रकारा यऊँ

उतिमको मध्यम कवनको निष्टिनिरधारा

उतिमको मध्यक कवनको तुमसमान नहि कोइहै जा

यासंसयमें सो कहहु ...

कोभेदस्तुतिसिद्धकैतोहिवताइ आरोपिकैं
तहभावउपजैसोइयमनलाइ रचिभावको
नंदिरंत्रनूपम्र अकलमूतिमाहिसुनि भाव
सिंघासनविराजैभावदितकेकुनाहि ॥ नि
जभावकीतहकरैपूजाहैठिसन्मुखदास नि
जभावकीसबसौंजआनैं नित्यस्वामीपास
प्रनिभावहीकोकलसभरिधरि भावनीर
न्हवाइकरिभावहीकेवस्त्रदक्षिविधिअंगवं
नाइ॥ तहभावचंदनभावकेसरि भावक
रिघसिलेऊ पुनिभावहीकरिचरचिस्वामी॥
तिलकाइस्लकदेऊ लेभावहीकेपुष्पउतनमगु
हैमालअनूप. पहराइप्रभुकोनिरखिजपसि
षभावकेदेधूप॥ तहभावहीलेधरैसोज
नभावलादलोग पुनिभावहीकरिकैसम

कैजोग तहआवहीकोजाइदाप
संचि तहआवहीकोकरैथा
चि तहआवहीकोघटडा
चि
रंगा तहआवहीकेराव्दन
यहआवहीकेआतीक
ववरक्तिवङ्कविधि
तैनाम
होहरिदेवनजानतसेव अ
तवपायसुनो यहगांघ
नाथअनाथअनाथअन
तिसअहोवनुसत्य अ
सुविगत्यअहोपजिन
तिहत्यनिहत्य अ

तौ नरु पावत नामतु॥ [illegible] सहौ ते जके सेव
जाहि विकार। करी तुम संतन की जु सहाइ॥
अहो हरि हो हरि हो हरिराई॥ अहो प्रभु हो
सब जीव न सयान दयातु मग जे घके पयपा
ला॥ तौ अब क्यों न करौं प्रतिपाल। अहो ह
रि हो हरि [illegible] हो हरिलाल॥ जे जैं प्रभु ब
ह्म पुत्र इ महेसा। जे जें सनकादिक नाई सेस॥
जे जैं पुनि और अनेक हो साध अगाध अगाध
अगाध॥ अहो प्रभु घां मक हे मुनि नाम। अ
हो प्रभु घ दैन के हे मुनि बैन। अहो प्रभु रूप कहे
मुनि रूप। अरूप अरूप अरूप अरूप॥
अहो जगदादि अहो जगदंत। अहो जग मध्य क
है सब संत। अहो जग जीव अहो जग तंत॥ अ

तहज्ञावहीकौजोइद्दाप
पैसकलपजुकैंजोग तहज्ञावहीकीकरैथा
कज्ञावघृतकरिसीचि तहज्ञावहीकौघटऊ
लीधरैताकैवीचि तहज्ञावहीकेराव्दन
तरिोशपतालमृदंग॥ तहज्ञावहीकौआतीक
नारहैआतिसेरग यहज्ञावहीकोआतीक
रिकैरैवऊतपूनाम ववरूतिवऊविधिउ
चौरैधुनिसहितलैलैनाम
आहोहरिदेवनजानतसेव आ
होहरिराइ परीतवपायसुनौ यहगौ घग
होममहाय अनाथअनाथअना
प आहोपूनुनित्यआहोवनुसत्य आ
होआविनासआहोआविगत्यआहोवत्रित्र
हैसेऊवतिनिहत्यनिहत्य आ

होप्रभुपावननामतुम्हारा जेतैतिनकेसब
जाहिविकाराकरीतुमसंतनकीजुसहाइ॥
अहोहरिहोहरिहोहरिराइ॥ अहोप्रभुहो
सवजीनसयोनदयातुमगनी घकेपयपा
ना॥ तोअवक्योनकरैघतिपाला॥ अहोह
रिहोहरिहोहरिलाल॥ जेप्रभुब्र
ह्मपुत्रईमहेसा॥जेसनकादिकनारदसेस॥
जेतेमुनिओरअनेकहोसाध अगाध अगाध
अगाध॥ अहोप्रभुघासकेह
होप्रभुघदैनकहैमुनिबैना॥
मुनिरूपाअरूपअरूपअरूप
अहोजगदादिअहोजगदंत
है सवसंता अहोजगजीवअ

तहत्रावहीकोजोइदीप
पैसकलपसुकैजोग तहत्रावहीकोकरैया
कत्राव घृतकरिसीचि तहत्रावहीकोघटऊ
लीधरैताकैबीचि तहत्रावहीकेराढ्न
लोरीरापताल मदंगा तहत्रावहीकेआतीक
नारहैमूर्तिसेरग यहत्रावहीकेत्रातीक
रिकरैवऊतपूनाम लवरलतिवऊविधिउ
चैरेधुनिसहितलैलैनाम
ओहोहरिदेवनजानतसेव ओ
होहरिराइ परीतवपायसुनौ यहगोघग
होममहाय ओनाथओनाथओन
थ ओहोपूनुतित्यओहोपनुसत्य ओ
होअबिनासओहोअविगत्यओहोपनित्र
हैसेजूपतिनिहत्यनिहत्य ओ

हो प्रभु पावन नाम तुम्हारा जैतें तिन के सब
जाहिं विकारा ॥ की रीत सुसंतन की जु सहाइ ॥
अहो हरि हो हरि हो हरि राई ॥ ॥ अहो पन हे
सब जांन सयांन दयालु सुगनि सबै पयया
ना प्रभु तो अवकैयांन कैसें प्रतिपाल ॥ अहो ह
रि हो हरि हो हरि लाल ॥ ॥ जे प्रभु व
रपु धरउ महैसा ॥ जे सनकादिक नारद सेस ॥
जे गैं पुनि और अनेक हो साध अगाध अगाध
अगाध ॥ ॥ अहो प्रभु पधांम के है मुनि नाम ॥ अ
हो प्रभु पद नके है मुनि नैना ॥ अहो प्रभु सरूप
मुनि रूपा ॥ अरूप अरूप अरूप अरूपा ॥
अहो जगदादि अहो जगदंता ॥ अहो
सब संता ॥ अहो जग

अहो प्रभु...

तत अनंत तत अनंत तत अनंत

...के कहि कौन रहे सिध साधक के सुख मौन॥

...गम मन बुधि न होइ विचार। अपार अपार अ-

पार अपार [illegible] व

ऊ तप्र ससा करि के दे होंहि प्रभु श्रुति असौन।

पूजा बिधि जान तत न हो सरनन ताषिन गवांन। वंदन इ

... मानकर

इ एक हो शिव संत लियं दंड समान कर

तन सों तन दंड दियं त्यों मन सों तन मध्य प्रभु

कर पाइ परे या विधि दोइ प्रकार सुवंदन न

नि...

कि कैरे ... जोरे करें कहा प्रभु मोहि आ

चय सो रहे हस ... पतिव्रत पतिव चन पंडे न

सोहइ पलक पतिव्रत ... नि सार

... सिष्य जानि

[illegible] मिलाऊं ६ ॥ सुनौ राध सभाय
तौहि कहौ। हरि आत्मकै नित संग रहै। प्रभु छोड
तनोहि समीप सदा जित हौ तित कौ यह जीव बहै
अवत फिरिकै हरि सौ हित राधहि हौ इसपाइ ह्टना
वगहै। इप्रभु हरम्य त्रनम्य त्रत जै। यह जति सब
पनवै कहै ॥२१॥ [illegible]
समर्पन देह ॥२॥ [illegible] प्रथम समर्पन मनवा रेउति
पै जोई दारा धन दास दासी जन धन करे चतु:स
नसर्व देयं मन औरजे मैमन है प्रभुतेतन ॥ रा
वानी सुन आत्मा अर्पन [illegible] नव
धा जति सुयह कहौ भिन्न भिन्न समजाइ
कौ नामक निष्टहै रा बिसुनौ हिपितलाइ
प्रति [illegible]
हिकौ हौ तुम ॥ नौ विधि [illegible]

मोसमझाइसुँनिकनिस्चयहमध्याक्रपतिसुना
ईकृपाकरिकौनऋवजानतहौगुसदेवजुअ
सरहैहोइकव॥ [illegible]
[illegible] ॥सिष्यसुणउतौहिप्रेमलक्षणाभति
कौसावधानह्वैकहौं॥ जोतेरेसिरिभागिहै॥
[illegible] ॥प्रेमलग्योप्रेमेस्वरस्यौतबभूलि
गयौसबहीघरबारा ज्यौंउनमतफिरैजित
तितनेकुरहानसरीरसंभारा स्वासउस्वा
सबैसबरोमचलैदृगनीरअखंडितधारा
सुंदरकौनकरैनवधाविधि छाकिपर्योर
सपीमतवारा॥ [illegible] हान
लाजकौनिलोककीनवेदकौकह्यौकरैन
संकभूतप्रेतकीनदेवजह्तेडरैप्रुनैन
कौनऔरकीइसैनऔरयनृणाकहैन
मुखऔरबातनातिप्रेमलक्षणा॥ [illegible]

[illegible] ॥निसदिनहरिसौंचितसदाठगैं
सौरहिएकोऊनजांनिसदेयहप्रक्ति॥
प्रेमलक्षणकहिए॥ [illegible]
प्रेमाधीनाक्रक्लाडोले॥क्योंकाक्योंहोवांनी
वोलै॥जैसेंगोपीभूलीदेहलताकोचाहैजासोंनै
हो॥ [illegible] ॥कवऊकेहसिउठयनृत्य
करिरोवनलागय॥कवऊगदगदसब्दनिकु
सैनहिंआगय॥कवऊहृदयउमंगि॥वैऊतऊँचै
सुरगावै॥कवहूकेमुखमौनमग्नह्वैसैंरहिजा
वै॥तोचितवृत्यहरिसौंलगीसावधानकैसैंर
है॥यहप्रेमलक्षणप्रक्तिहैसिष्यपुनऊसद्गुर
कहै॥ [illegible] ॥नीरविनमीनदुषीह्वै
रविनसिसुजैसैंपीरजाकेऔषधविनकैसैंर
जाउहै॥चातरगज्यौंस्वांतिबूंद

चंदनकी चाहि कैरि सर्प ग्रकुलातु है निर्धन ज्यौ
धन चाहै कामी निको कंत चाहि ग्रैसी जाकै चाहि
ताकौ कछु न सुहातु है प्रेम को प्रभाव ग्रैसो प्रेम
तैं नेम कैसो सुंदर कहत यह प्रेम की बात
[illegible] यह प्रेम प्रीति जाकै घटि होइ
ताहि कछु न सुहावै पुनि भूष त्रिषा न है लागै
वासैं निसदिन निंदन आवै मुख ऊपर पीरी स्वा
ससौ री नैन ऊनी झर लायौ ऐ प्रगट चिन्ह दास
तहै ता कौ प्रेम नड़ रैड़ रायौ [illegible] प्रेम
प्रीति यह मैं कही जानै विरला कोई हृदय कलुत
क्यौं रहै जा घटि ग्रैसो तै [illegible]
[illegible] स्वामी प्रेम प्रीति यह गाई सो तो लु मम
ध्यमल सुनाई उत्तम प्रीति पराप्तु कैसी करकु ग्र
नयू ह्वै हि रै तैसी [illegible]
[illegible] लिखतैं ग्रंथ षावदी सुनिवे की ग्रति प्यास प

रागत्तितोसोंकहैं॥जातेहोइप्रकास॥६७॥ चौपई॥
वस्तुएकवऊनहोइ॥हीरसौं निकटिवरती
नितिही तहसदासनमुषरहैश्री॥ग॥ हयजो रैन
त्यही॥पलुएककवऊनहोइ अंतर टगटगौल
गीरहै॥यहपराभक्तिप्रकासपरिचय॥सिष्य
सुनौसद्गुरुकहै॥ ॥दोहा॥ सेवकसेव
मिल्योरसपीवत॥भिन्ननहीअरुभिन्नसदाह
॥ज्योंजलवीचधस्योजलप्यंडसुप्यंडरुनीर
जुदैकछुनाहीं॥ज्योंदृगमेंपुतरीदृगएकनहीं
कछुभिन्नसुभिन्नदिषाहीं॥सुंदरसेवकभाव
सोंलसदायहभक्तिपरापरमात्ममाहीं॥६८॥
छप्पय॥ श्रवनविनाधुनिसुनय॥नैनवि
नेहारय॥रसनविनाउचरय॥प्रसंसावकवि
स्तारय॥नृत्यचरनविनकरय॥
लवजावै॥अंगविनामिलिसंग

वढावै विन्तु सौ रानवैतं है सेव्यकौं सेवकता
लीयें रहै मिलि परमात्मसौं आत्मपरागतिं
सुंदरकेहे [illegible] सेव्यकों जाहि कैं
सहेसैं मिले येकसो होइ पै एकहै नामिले अ
पनौं भाव द्रास्यत्व छांडै न तौ सा परापहि है
भागपावैकहौ [illegible] मिलै
येक संग नहीं भिन्न अंग करैयों विलासध
रै भाव दासा [illegible] ज्यौं मृग २
साधु पगजारी एकमेक अरु दासतन्यारी है
तौ स्वामी सेवक एकातु प विलसै यह भिन्न वि
वेका [illegible] हरि मैं हरिदास विलस
सकरै हरिसौं कवकन विछ्हौ हय रै हरिअ
चल्यौं हरिदास रस रास पीवनकौं यह है भा
वधुदा [illegible] तेजौमय स्वामी तहा
सेवक है तेजौमय तेजौमय चरनकौं तेज

सिरसनावइ। तेजोमय सर्वअंग। तेजो मैं मुष आरविंद
। तेजोमय नैनन निरषि। तेज भावई। तेजो मे व्रह्मम
प्रसंसक रैज मुख। तेज ही की रसना। गुन गान वद
गावई। तेजोमय सुंदर कै भाव पुनि। तेजोमय। ते
जोमय भक्ति कौ। तेजो मै पावई॥५५॥ दोहा छंद॥
त्रिविधि भक्ति लक्षण कहे। उत्तम मध्य कनिष्ट
सुन हि सिष्य सिद्धांत यह। उत्तम भक्ति गरिष्ट
॥५६॥ इति श्री सुंदरदास विरचित: ज्ञान समुद्र
[illegible] भक्तियोग सिद्धांत ना
म द्वितिया [illegible]॥२॥ सिष्य उवाच॥ चौपई छंद
हे प्रभु नवधा कही कनिष्टा। प्रेम लक्षणा मध्य प्रस
पष्टा। परा भक्ति उत्तम सु वषांनी। एती नौ मैं नीके
करि जांनी॥१॥ अब प्रभु जोग सिद्धांत सुनावहु। त
के अंग मोहि समझावहु। जिन सर्व सजे तन स्वा
मी। कहहु कृपा करि अंतरजामी [illegible]

वढावै बिनुसी रानवैतहं सेव्यकौं सेवकना
लीयेरहै मिलिपरमातमसौं आतमापरा भति
सुंदरकेहे सेवाकोजाईकैद
मझेसैमिले येकसौ होईपेएकहै नामिले आ
पनौं आवदास्यत्वहा डैनही सापरापतिहै
आगपावैकही मिले
ऐकरंगानहीपिंडअंगा करैयोंविलासध
रैआवदासा ज्योंमगट
साधुपमझारी एकमेकअरदासतन्यारीतै
हीस्वामीसेवक एकासुखविलसैयहपिन्नवि
वेका हरिसेहरिदासविल
सकरैहरिसोंकवहुनविछोहपरै हरिअद
यतौहरिदास रारदारसपीवनकोंयहैमा
वयुदा तेजामयस्वामीतह
सेवकहंतेजोमय तेजोमयचरनकोतेज

सिरसनावइ तेजोमय सर्व अंग तेजोमै मुष रवींद
तेजोमय नैनन निरषि तेज नावइ तेजोमै ब्रह्म
प्रसंग कै रैज सुख तेज हो की रसना गुना नवाद
गावइ तेजोमय सुंदर सु नावइ पुनि तेजोमय ते
जोमय भक्ति कौ तेजोमै ध्यावइ ॥५॥ दोहा छंद ॥
त्रिविधि भक्ति लक्षण कहे उत्तम मध्य कनिष्ट
सुनहि सिष्य सब होत यह उत्तम भक्ति गरिष्ट
॥५॥ इति श्री सुंदरदास विरचिते ज्ञान समुद्र
[illegible] भक्ति यो [illegible]
मां [illegible] सम्पूर्ण [illegible]
है प्रभु नवधा कही कनिष्ठा प्रेम लक्षणा मध्यम
पष्ठा परा भक्ति उत्तम सु बषानी ए तीनो मै नीके
करि जानी ॥१॥ अब प्रभु जो गासि होत सु नावहु त
के अंग मोहि समझावहु तुम सर्वज्ञ जे ते सा
मी कहु कृपा करि अंतरजामी ॥ [illegible]

तैसा अपूर्व कौ चाहि करि योगसिद्धांत
प्रसंग तो हि सुनावौं हैं तैसौं अष्टांगयोग के अंग तिन
के अंतरभूत हैं मुद्रा बंध सप्त नाडी चक्र प्रभ
व ओ वृहि तैरह सत्त प्रथम अंग
जम कहे दूसरे नियम वता त्रितिय सु आसन जे
द सु तौ सब तौ हि सुनाऊं चतुर्थ प्राणायाम पं
चम प्रत्याहार षष्टम सु धारण ध्यान सप्तमा वि
स्तार पुनि अष्टम अंग समाधि है भिन्न भिन्न स
मझैहैं अवसावधान है चित्त सुनि ते सब तो हि
सुनाऊं हौं दस प्रकार के जम कहूं द
श प्रकार के नेम पहिले सब हित वषा
है के प्रथम नो ठकी जिये तव कहूं पर
विस्तार महलाइ ते सु ढिगौं नहीं त्यौं जम नि य
म विचार प्र
थम अहिंसा सत्यहि जानि रजानि अस्तेय सु ता

ी ७ ब्रह्मचर्य है ८ ग्रहै ८ क्षमा ९ धीत संत्रिनुरा
ी ६ दयावडो गुन है ११ आर्जव हृदय सुआने
१८ मिताहार पुनि करै ९ सोचनी की विधि जा
नै ॥१०॥ ए दस प्रकार के ज्ञ स। कहे। हठ प्रदीपका ग्र
मेंहि सो पहिले है। इनको ग्रहै। चलत जो ग के पं
थ महि ॥५॥ अ [illegible]
[illegible] मन करि दोषन कीजिये
वचन न लावै कर्म घात न करिये देह सोई है अ
हिंसा धर्म [illegible]
सत्य सु दोइ प्रकार। एक सत्य जो बोलिये मिथ्या
सब संसार। दुसर सत्य शु ब्रह्म है ॥५॥ [illegible]
[illegible] सुनिये सिष्य अब
हिं स्ते या। चोरी है। प्रकार की
सव हिव कौ तौ। मन की चोरी मन हो.

।ब्रह्मब्रए

रहिनाति नलौ विधिपालि र कोमञ्छष्टपुको
रसहीकरि टालिये।बाल्हिको छहै टवीरजातिन
हिहोइरे।ओरबात अवनाहि।जितेदिकोइरे

नारीसम नैश्रवनपुनि।दुहित्ताबलाहोइगुह्य
वारताहा स्यरति।वऊरिसयरसयकोइ
।सिष्यसुनहिं यहभेद मैघुनअष्ट
पकारतजि कहै मुनीस्वरखेद ब्रह्मच ऐतब
जानिये हैसा
अवमुनहि सिमोसो।सहनताकहौ सबतौसो
डुष्टुपदेहि जोनारी।दुसह मुखबचनपुनि
कदेनहि सोनको पावै।उदधि महि
नारी

अग्निवुझिजोवोवउरितनत्रासदेकोउाह्ममा
करिसहेपुनिसोऊ॥ छन्द छप्पतिलक्षणा॥६
[illegible]॥धीरजधारिरहेउरस्रतर॥जोउब्बदे
हहिआस्यरेजू॥वेठतउ ठतवोलतांधीरजसो
धरपावधरेजू॥जागतसोवतजीमतपीवत
धीरजंधहिजोगकरेजू॥देवदयेतहिनूतहिपे
तहिकालडुसोकवहूनडरेजू॥१७॥अथ छन्द
लक्षण॥ओटकहद॥सवजीवनिकेहितकीजुक
हेमनवाचकसोंकायदयालुरहे॥अुपदायक
समर्सोंनायलिये॥सिष्यजानिदयानिरहिये
॥१८॥सो पद्र आढह॥ यहकोमलहृदवरहेनि
वासखोलेकोमलवानी॥पुनिकोमलहूछीनि
होरेसवकोकोमलतासुखदानी॥जोको

सिकै सेनीकौ विध कीजे वुधि हे ऋषे तपो: ॥२६॥
अ जेवल हे एसु जे सिष्य योग सिद्धि कौं पा
वै
जो
सातिक अंन सु करै न हू अति मधुर सचिके
एनिरपै अहे तजि भाग चतुरथ यग है सार
सुनि सिष्य कौ यह नितहार
बाह्याभ्यंतर मजनक
रियें मृत्तका जल करि वपु मल हरिये राग
दिक त्यागे हदै सुद्ध सौच ऐ विधि जांनि प्र
बुद्ध
दश प्रकार ये जम कहे प्रथ
म योग कौ अंग दश प्रकार अव नियम सुनि
जिन्है लिन प्रसंग
तप संतोष हि गहे तुहे आस्तिकि सुजानये
दान समर्पन करि दे मांनस पूजा ठांन याव च

नसिहोतसुरुनव ।। लाज मतिद्द ढकरिराषय
जापकरैयप्रख मौन ।। तहांलगवचनन आ
षय पुनिहोमकरैइहि विधितहां जैसीविधि
सदुरुकहे ।। एदशप्रकारके नियमहै आगप
विनांकेसैलहै [illegible] पा
यक्रो [illegible] सबसपर्श रूपतजणं त्यौंरस
गंधनोही अजणं इंद्रियस्वारथ्रैसें रहणंसो
तपजाणि नितमरणं [illegible]
[illegible] देहकौप्रारब्धआश्चापैरहै
कल्पनाछाडि निश्चंतहोई पुनियथाला
भकौवेदसुनिकहतहै परमसंतोषशिष
जोसोई [illegible]
[illegible] शास्त्रवेदपुरानकहतहै शब्दब
लकौनिश्चयधारिपुनिगुरुसंतसुनावत

हिविचारि होइ कै न
ोइ वारवार रहि पता हि विचारि होइ कै न
ो त्र मति श्रांन हि अप्रतीति ह्यतैं टोरि क
रि वि स्वा स प्रतीति वि श्रांनि उरि यऊ आस्ति
ु हि निरधारि
दानकृतै त्रय विधि सुनि री
प्रवेस एक दान कर दुविय एक दा
पवरा हि प्रवेस एक दानकर दृ य एक दा
न उपदेस एक दान उपदेस सु तीय मो थहि
ै हृस रजल ग्रुन्न वस्त्र का रि दा पै कोइ पा
त्र कुपात्र वि शे ष मली सू नि पज यधा न सु
द र दो षि वि चारि उत्रय विधि कहि र दानें
तौ स्वामी
संगादेव श्रम गानि मल ग्रंगा सेवे जू कारि जीव
श्र नूप पाति पुष्प गंध धूप दीपै वे जू नहीकीं श्र
सा कैटे पासा इहि विहासानि:कांम रोष श्रे सं

नानयनिश्चयज्ञानयापूजातेनवहिनजाम
नाको
नानौड्डतप्रकारते ताकोनोहिनजीत जोर
ऊरनेकोनको सोऽशुनयासरीत लोऽशुनय
सिहातर ऽ । सतसवजापतवीऽचेरज्ञाति
कोतोर शुनयनिरूपतिजेतोऽ वघूतेलाऽव
पितेरते ज्यो कोत्यो पोनो ऊसेले उविचारिशि
लवऊविचरिवोतो
लजातरगुरलतजनवीतातेरसव
जतनमनडलावेनाहिंअपनो करेलोकऊलो
जालजोकरेकुतकुटवकी लंकुनलगावेना
हि ऽहिलाजतेसवकाजहोऽ लाजगहिमनमा
हि॥२०॥
व संसारजानितजेतिनहिपिलोलपनोहिऽ स
जोदिकवीकरयनऽकाऽऊमन्नत्यागीसलदेऽ

षताहि विचारि होइ किनहि
सोई वारंवार रिषताहि विचारि होइ किनहि
सो च मति आनहि अप्रतीतिहृदयतैं टारि क
रि विस्वास प्रतीति आनि उर यकु आस्ति
बुद्धि निरधारि
दानकहतै है त्रय विधि सुनिसो
ष करहि प्रवेस एक दानकर देस पात्र एक दा
न उपदेस एक दान उपदेस सुतोय मोथं हे
इ हूस र जल असु रुअंन वस्त्र करिया पै कोई प
त्र कुपात्र विशेष मलीन निपजय धान सु
दर दोष विचारि उत्रय विधि कहि हर दान
तो स्वामी
संगा देव अत्र गानि निर्मल अंगासेवै जू कोरि जीव
अनूप पाति पुष्प गंध धूप षेवै जू नहीं को आ
साकटै पास इति विदा साने: कांमं हाषै ये सं

नानय निश्चयज्ञानय ॥ पूजादांनयदिनजाणै
॥२॥ अथ सिद्धांत व्यापकोलक्षण ॥ कुंडलिया ॥
दो ॥ वानीबेऊतप्रकारहै ॥ ताकोनाहिनअंत जोइ
अपनेकोमनकी ॥ सोइसुनयसिद्धांत ॥ सोइसुनय
सिद्धांत संत ॥ संतसबजाषतवोइ ॥ चित्तआनि
कैठौर ॥ सुनयनितप्रतिजेकोइ ॥ यथाहंसपय
पिवैरहैज्यौंकोत्योंपानी ॥ ऐसैलैकविचारिसि
षवक्रविधिहैवानी ॥२॥ अथ रुद्धीकौलक्षण ॥
[illegible] लज्जाकरैगुरसंतजनकीतासैंसवका
जतनमनडुलावैनाहिअपनौ ॥ करैलोककुला
ज ॥ लज्यौकरैकुलकुटंवकी ॥ लंछनलगावैना
हि ॥ रहिलाजतैसवकाजहोइ ॥ लाजगहिमनमा
हि ॥३०॥ अथ मतिकौलक्षण ॥ दोहरा ॥ नांनांसु

निद्राकरैग्राईकैकोई याप्र
पूजामानि डाईग्राहर सुंदरदृष्टमतिकोहरसे
कारमतिनिस्थलजाकी जापानिता
ई प ऐकदोइघटिकाजुग
प्रतधारिकरैमुरमोनसों वडोत्रतिमा
हैमनपोनसों जोग्रढिक्यकछुहोर
ग्रहै सिद्धतौहिकहिदीनेमलोयहमागहै
अवहोमउमैय
ईकग्रनिमहि
प्रकारस्थानि सिपकहोतोहिवर्णनि जोन्दवत्तायिरा
लाकिक्लिहोमेसोपुबतीजानि सोसानग्रगानिप्रजालि
सुहोइतोहिग्रोरनपोम
नीकैकरेइडियहोम दसप्रकारयेनेमयोगग्रंथ
सप्रकारवैजमकहे सिद्ध
माहेलिबेहुसकुरूरतेम सावधानसूवे
सुनारतोहि त्रनयग्रंगरेजोगके
नहोहि ग्रवहिषडंगवषानितो

प्र घ्यमकहौसिष्यआसनभेदा जातैरोगमिटहि
बिक्रमेदा रुषिमुनियोगीव्यासाधे तिनिसवपह
लीआसनसाधे॥ [illegible] ॥ सिवजानतहै
सवजोगकलानितसंगसिवापुनिहैअचला दृढ
आसनतेनहोवंडपिसे दृगदेषतदेयतिलोगहे
सी॥ [illegible] ॥ चतुरासीलषजीवकी जा
तिकहतहैवेद तितनेहिआसनसवे जानतहैसि
व भेद जानतहैसिवभेद औरजानयनहिकोई
आपद्यातिनकरी सुगमकोरदीन्हेसोई लहल
हमहिरकेएककाटडुपसा प्रुलप्रसवनिकोको
रयुगटआसनचतुरासी॥ [illegible] ॥ चतुरासाअ
निमैसारहतहैजांनि सिद्धासनपद्मासनहिनि
कैहोवषांनि॥ [illegible]
[illegible] इतिवामपादकी ल
नेकेक्षोच वाजोनिहोरतातिलीवंक

तैसैं ही युगति करि विधि सों गलै प्रकार मेद है कै
ञापरि है न पाव ञानिये सरल सरीर है इंद्रिय
सयमकों ग्र लउर्ध है लि न्नू के मध्य ञानिये
मोह के पार कों उधार तत्र स्प मेव सुंदर कों
तसिधग्रा स्त वमानिये
हल उरउधरय प्रथम वाहिय गञान
य वो पहिउ रउपरयत वहि दृदल पाठ न
य होञ करयुनि के रिपदृ पोक्ष करि ञावर
हट के गृहै ञ्रगुह चिवुक बिछि स्थ ललाट
डा रहि जाति इहि उत नेब करि ञ्र गनासि
राषि है बव्याधि हर ता जोगी तको पद्मा
य हतो छिर सिव ञ्रार गुञ्रास
न हर हि रोग परि इतदोर ञ्रा म सध जोगा
तै न यह यउन्ने साधि जवलगय कुचे नि

वसमाधि॥ [illegible]
[illegible] आगेंकीजेप्राणयामंनाडीचक्रपावेंम
सपूररोपैरेंचेकोइहैनिःपावेजोगीसोइ [illegible]
[illegible] नाडीकहीअनेकविधिहैदसमुष
बिचारइडापिंगुलासुषमणा। सबमहिप
र यसार॥ [illegible] वामइडासुर
जानिचंद्र पुनिकहीसततकोदछे णस्वर
पिंगुलासूरमयजानहुताकोमध्यसुषम्ना
बैहै तासिजानततनहिकोइहै यहअंगस्वर
पकाज याहीतेहोइजवइडापिंगुलागतिथ
के प्राणायामघनावतौ तवचलेसुषम्नाउ
लटिकोसुषउपजैघरिआवतै [illegible]

नासौंतिन्हकेनामा॥के
दसप्रकारकोपवनहै॥
हैं बिनानहीजोलियेवाकोनठैरविश्राम
प्राणाथानसमानहिजानैव्यानोदां
तपवमनमाते नागक्रूमैकलसुकहिये
देवदतसुधनंजयलहिए
प्राणाहृदयमहिवसतहै॥गुदमंडलेअप
ननाभिसमानहिजानिरा॥कंठहिबसैउ
दानाकंठहिबसैउदानव्यानव्यापकघटसा
रा॥नागकरयतडगार॥क्रूमिसोयलकउघा
रा॥क्रकलसुउवजैक्षुधादेवदतहिजंभाए॥
मृतैधनंजयरहै॥पवनपूवेसोप्राण॥
अनुक्रमकहतहौ॥स्तुति

सिषतिनकेनामपायौंछेताहिसुनारहो॥बोध
सोंपाणायाम॥७०॥अथषट्चक्रनुक्रमोपद्धे
॥छंद॥सिषप्रषमचक्रआधारजानितहआ
क्षरचारिचतुरदलानि॥पुनिवसषसवाणिवि
चारिलेऊहिसबसरीरआधारऊ॥१॥पुनि
स्वाधिष्ठानसुदूतिचक्रा॥तहषटदलषटुअ
क्षरअवक्षागनिवसैयरलयवर्णमध्या॥सो
सबूलचक्रकहिरप्रसिध्या॥२॥मणिपूरच
क्रदसदलघनावा॥पुनिअक्षरदसतेसुना
वा॥तहडढणतथदधनपफप्रमाना॥इनिव
र्णसहितत्रितिपवषानि॥३॥अनुहातच
क्रहैहृदयमांहि॥दलअक्षरद्वादसअधिक
नाहि॥कखगघङचछजझट

सिषचक्रवत्षयस्तमुजिहेत सुनिपंचे
मचक्रविसुधग्राहिोदलचौसग्र हरलगो
ताहितहग्राहिअवारगुवारंग्रत सुनपोड
रालरलकेगनते अवग्राहाचलसुग्रव
मेझारै लषिहदलहैग्रहरविचारितहिदं
वरुत्रतिअनूप यह षद्गुचनककचोस्वर
प जवनिषटचक्राहिनेदिजा तवउहेमु
षलाद्गु षसमार ताहितेप्राणवामसारसुनि
सिद्धकहैतौकोविचार
इडानाडिपूर्वकरकुंभ
करपैमाहि रेचकको रेपंगला सर्वपाति
गलटिजाहि बीजमंत्रसेलु
नै षोडसपूरकपूरिरे चवसटिकुंभकरना
हालिंसतिका रेचना वड
लिपिपर्यवगैसैधारै पूरिपंगलाइडानिका

रै कुंभकरासि प्राणकौं जीतै चतुरखारञ्जन्या
सव्यदोतै ॥ दो ॥ पामरक्द ॥ यहराणेनउकुंभन
इयैइहत्रातिपुणायाम ॥ सहुरकिपातै पाइये
मनहोइअतिविश्रांम ॥ अवमतमतांतरकहैते
हो ॥ सुनिसिष्यअन्यप्रमावगोरखउकवांनि
होतिहिसुनतउपययभाव ॥ गोरखउवाच ॥ चर्प
ई ॥ दो ॥ सोहं सोहं हंसो सोहं सोहं सौतं अ सो ॥ स्व
सोस्वास सोहं जाप ॥ सोहं अ पै आयं ॥ द्वादसम
नापुरककरै ॥ द्वादसमात्राकुंभकधरै ॥ द्वादस
मात्रारेचकजांणपूर्ववतउवियययठांण
॥ अधमेद्वादसमात्राउत्तं मध्यममानाहिगु
णयुतं उत्तममात्रात्रिगुणकहिरे ॥ प्राणया
मउनिर्णयलहिरे ॥ दो ॥ सोरठा ॥ कुंभक
अष्टउविधिमुद्रादसहिप्रकारकी ॥ वंधतीनि
तिनमधि उतमसाधनजोगके ॥ दो ॥

सूर्य नेरन प्रथम हिति
किमकानाम हिरे सातवा रपु निवितिय सातवो
जाई कहिरे पचमैत्रसैत्र काआं मरीपकुस
वकुर्यै ग्रहिरे सप्तम ग्रष्टमकेवलमानके प
जानके नासप्तम रके होइ यवनरमरोधन तवपु
कामकपूप्रकार के होइ यवनरमरोधन
झावेचलगावहि प्रथम करै घटलोधन
जवहित्रसकुंभकसधहिावाजैग्रनहृ
नादइस प्रकार को धुनि सुनहि कुटहि सकल
प्रथमभ्रमरगुंजार सो पपु
विकार ढंग चतु
निकुतियकहिजो त्रितियवजहि मृदंग
घंताल सुनिजो पंचम घंटानाद षष्ठी बीनाधु
निहोई सप्तम बजहि भेरि अष्टम दुदंभि होई ग्र
वनौमै गर्जे समुद्र की दसमा मेघ घोष हिं गुने
कहि सुंदर जन नाद को दस प्रकार जोगी सु
सुनि मह
नै

महावेधंचयेन्द्री उडिया
मुद्रामहाबंधह महावेधंचयेन्द्री उडिया
नवेधसुमूलबंधहै वेधजालंधरकरी विप
रीतिकरणपुनिवज्रोलीसक्तिचालनलोजि
येऽमहोइयोगीश्वरकाया सस्किकलोनितप
जिये
प्रवणसबदकोग्रहतहैनैग्रहतहैरूपगंधघ्रा
हतहैनासिकारसनारसकूचपरसनारस्कोंइ
पदुचारस्परसहिचाहेइन्द्रियचनकोफेरिज्ञा
त्मानित्यग्रहै पन्ध्रग्रहिगहैकिरणरवि
समिटइवण्रमकारियलाहारविषयसचाद
दिकप्रवर्ण वहत्चार
कोणलकारहितु नात उपध्यकेपपुनपी
तवणहारिमदनहि विद्धि
अनुपतस्थानकोपचपूर्णहन
सिन्बनोहि निसिध्यइवनिजय

सूर्यभेदन प्रथम हिति
कुंभकनाम द्वितिय सीतली
उज्जाई कहिए सातवा का ग्रांमरीपसू
चतुर्थ ग्रहिए पंचम भैरव
नासप्तम ग्रष्टम केवल मानके ए
जानकै मूर्छना होइ पवन मरोधन तवसु
कुंभकके प्रकार के सोधनं
हावे चलगावहि प्रथम करै घटसोधन
जवलिग सकुंभक सधहि वाजै सुनदद
नाद इस प्रकार का धुनि सुनहि कुटहि सकल
प्रथम भ्रमर गुंजार संपतु
विपरदा वंसहि मृदंग चतु
निड तियक हिडै त्रितिय वसहि
पंचम घंटानाद षष्ठ वीना धु
नि ताल सुनिजै पंचम घंटानाद
निहोई सप्तम वज्र तिमिरि अष्टम डुदामि दोई ग्र
वनी मै गर्ज समुद्र की दसम मेघ घोष हिए नै
नहि सुंदर अनहदनाद की इस प्रकार जो गु
सुनि महा
नै

मुद्रा महावंध है। महावेधं खेचरी उडिया
नेवंध सुमूल वंध है। वंध जालंधर करी। विप
रीतिकरणी पुनि वज्रोली सक्ति चालन कीजि
ये ऽ महो ऽ योगी अमर काया। सस्कि लो नितप्र
जिये॥ [illegible]
श्रवण सब्द को गहत है नैं गहत है रूप॥ गंध ग्र
हत है नासिका रसना रस को चूंप रसना रस की ग्र
पत्व चास्य रस हि चाहै ऽ इनि पंच न को फेरि आ
त्मा नित्य अराहै [illegible] मंत्र गहि गहै॥ किरणि रवि
समिटै ऽव णि ऽ म करि प्रत्याहार विषय सब्द आदि
दिक प्रदर्सा॥१०॥ [illegible]
[illegible] यह चार
को [illegible] कार हि [illegible] ॐ ज्ञान [illegible] पुन पा
तव [illegible] विधि [illegible] तु
अनूप [illegible] चित
स्पंजन [illegible] निसि [illegible] निज [illegible]

तो भूमि धारणा सोई

गुद ल्वकार संयुक्त निजल च
इ षंड निरधारे पुनि रूपी के सत्र कित असो
त कंठ पारदाकार तह घटिका पंच प्राण करि
लीन चित धारि करि रति र विषकाल कूट व्या
पै न हि कबहूं वारिधारणा कहिए

पद्म
रागञ्रामासे पुनि इंद्रगोप इति मध्य तालु का क
हियत तह निवासी तह घटिका पंच प्राण करि ला
न गंधहि उत्तवचने सुनि शिवत्र अग्नि न यहेत
कहिए सेत धारणा जान

सुवमध्य यकार सहित षट्कोण त्रेसील
हि विचारु पुनि मेघ वरण ईश्वर करि त्र्यकि
वा रंचार निहार तह घटिका पंच प्राण करि ला
न सो चराचर सिद्धि हियावे सुनि सिष्य धारणा वा

यतत्वकी ॥ जोनीकैंकरिखावै ॥८॥ अथ स्वरूप
सतत्व ॥ २ रणं ॥ अब ब्रह्मरंध्र आकासतत्व है सु
अवतुलाकार ॥ जहँ निश्चयजानि सदासिवति
सृति ॥ अग्नि रसहितहकार ॥ तलहटिकापंचप्र
लकरिलानेपमैंमुक्तिकीदाता ॥ सुनिसिद्धधा
रणकों मतत्वकी ॥ जो गगग्रंथदिखाता ॥ ९ ॥ यह
ऐकथनी नाएकड्राविणी ॥ एकसुदहिनी कहि
पं ॥ पुनि एक अमिणि ऐकसो लिणी ॥ मडुरुदिनाल
लहेप ॥ पपंचतत्वकीयंचधारणा ॥ तिनकेनेस्मु
नये ॥ अब आगैंध्यानकरूंवकेविधिकरि जो ग्रंथ
निमहिगारे ॥ १ ॥ अथ ध्यानवर्ननं ॥ दोहा ॥ छंद ॥ प्रथ
महिध्यानपदस्थहो ॥ दुतियपिंडस्थघीत ॥ त्रितियध्या
नेरुपस्थपुनि ॥ चतुर्थरूपातीत ॥ १ ॥ प्रथमपद
स्थध्यानवर्ननं ॥ जेपदचित्रविचित्रस्वे अक्षरस्त
महापवित्रजामें ते अलाकिवि च

रिकुंमकानंत्र जपैउर
घरै निहचै करिता मैं कैवल [illegible] दृस्थिहै
ग्रहरतै पुनि जानि ग्रनात्म [illegible] ग्रथयाउ
लहैउ विरामैं
मन निहस्थुल हो [illegible] प्रुनि सिपकहो धा
स्य ध्यानवर्नं [illegible] खंडसोचनंकोरस्हस्य षटचक्र
न खंडस्य [illegible] ध्यानप्रमानं
निकौ धरिरे ध्यानं पुनि सकु [illegible] निहारि
परस्थध्या [illegible] देखिहै पुन प्रकासद
कैं त्रिकुट माहि विस्फुलिंग देखिहै [illegible] विजुली प्र
पजोति दीपमाल देखिहै नक्षत्र माल विजुली प्र
पुतरहो रहिहै अनंतकोटि सूरचंद्र ध्यान दधजोर
है मरीचिका समानरु [illegible] सम [illegible]
मलसमस्त विस्वतेजमें वर्षानि [illegible] सम दसौदिसा जलामस्प्रत्यद
कै उधरिनै [illegible] दीजिरे [illegible] रूपातीत ध्यानंन
ध्यान कीजिए [illegible] ध्यान कछु [illegible]
यह रूपातीत जु [illegible] चित्तलीन पुनि
रहै विदान [illegible] प्रद [illegible]

तसवसाधिसाधुपदनोहिनिनिद्दैय॥ अहंकारनहि
लेशमहानसवानेस्थूलहिजाय॥ शिष्यपरख्यवि
चारिजगतमहिसोगुरुकिजय॥ [illegible]
॥ सदगुरुसनमुखजावप्रगटसर्वोपरिराजय॥
२ ज्ञानविज्ञानअचलअरूपविराजय॥ सुख
निधानसर्वेगमानअपमाननजानै सारासा
रविवेकसकलमिथ्याभ्रममानै॥ पुनिलिद्यते
हहियग्रंथिकीछिद्यंतेसवसंशयं॥ कहिसुंदरसे
सद्गुरुसही॥ चिदानंदघनचिन्मयं॥ [illegible]
॥ शब्दब्रह्मपरब्रह्मभलीविधिजानई॥ पंच
तत्वगुनतीनिमृषाकरिमानई॥ बुद्धिमंतसव
संतकहैगुरसोइ॥ औरठौरसिषिजाइभ्रमैम
तिकोइ॥ [illegible] ॥ ब्रह्मीभूतअवस्थाजा
महिहोइ॥ सुंदरसोइसद्गुरजानैकोइ॥

सोगुरुसौं आइ प्रश्न करै करजोरिकैं शिष्य
मूलविनाश संसाय को जानारहै
षोजत षोजत सद्गुरु पाया
देषत ही भ्रम नयो गु
सूरिला गगन गयो शिष्य आया
नंदा यह तो क्या करी गोबंदा
पायो संतोष कायमे
रको दरसन देषता शिष्य
मन महि मान्यो मोष
सीस नाइ कर जोरि
रो अब भयो
हे प्रभु लीजय छोरि अ
शिष्य सुप्राथना करी
कृपा मोहि कीजै
अभैदान गुर दिजीये
अहं अप्र कामी
घितेर
ते देव स्वामी
बडे भागपर रलहे अंश
प्रभु हो अंना
अभैदान दीजे
अभैदान दीजे
अभैदान
ता हे दिजीजे अभैदान
दीया कोनकी जे
प्रागही मो रहीया

वधांन्कैं अतिप्रवीन ॥ जिमपंछीकी गति गगन
माहि कछु जात जात दिष्टि परै नांहि ॥ पुनि शू
इ दिषाई देत सोइ वाजीगीकी गति है हो ॥२॥
हि सून्य नं समझौ रनौं ॥ उत्कृष्ट ध्यान सव
सव ध्यान माहि है सून्याकार जु व्रह्मग्र
पु दस हैं दिश पूरण अति अमापु ॥३॥ जो करे
यध्यांन साज्यो जहो ॥३॥ तव लगै समाधि अखंड
सोइ पुनि उहै योगनिद्रा कहाय ॥ पुनि सिष्य
दैउ तो कों वतारा ॥४॥ [illegible]
ना ॥ [illegible] पुनि सिष्य अवहि समाधि लछ
ण ॥ मुक्तयोगी वर्तितह साधय साधक रैके हो
॥ क्रियाकर्म निवर्तते ॥ निरुपाधि नित्य उपा
धिरहित ॥६॥ है निश्चय मानियें कछु भिन्न भा
वन रहै कोउ सा समाधि वषानियें ॥६॥ नहीं सी
त उष्ण दुचार षा ॥ नहीं मूर्छा आलस रहै ॥

हींजागरंनतहिम्रुप्र सुप्रितत्वदंयेगोल
है मनोरपहिगोलिजा२लंवन एकोमेकहि
वानिये कछु भिन्न भावन रहैको ३ सासनाधि
वपानिये नहिहर्षसोकंनम्रुखंडखंनहीमा
नत्रमानेयो प्रुनिमनो२द्वीवलिनद्व मातेजान
ग्रैयो नहिजातिकुलनहिवर्णत्राश्रम प्रजावप्र
ने२जानिये कछु भिन्न भावन रहैको ३ सास्म
धिवपानिये २ नहिसद्रूपरसद्रूपरसनाहि
गंधजानयरचहू नहिकालनकर्म भावहे
नहिउदयअस्तप्रपंच जिमद्दी२ आज्यआज्य
जलेजलहिमिलानियेकछुभिन्न भावनरहैको ३
सासपाधिवपानिये नहिएवदयंतपिसा
चराद्वस दृतप्रेतनसच रै नहिपवन पानीय्रा
निनयप्रुनिसर्पस्पर्घहिनाइ२ नहिजन्मनन
सनेनागाहि यत्रवल्मगानिये कछुभिन्नप

वंनरहैकोऊ॥सासमाधिवषानिये॥पु॥ [illegible]
दोहा॥योगसिद्धांतसुनाइयोग्रंथग्रंथसंयुक्त
यासाधनब्रह्महिमिलैतेऊकहियेमुक्त॥ [illegible]
सुंदरदासेनविरचितेज्ञानसमुद्रग्रंथे [illegible]
नामत्रितियोल्लासः॥३॥सिष्यउवाच॥ [illegible]
प्रभुवकृतकृपातुमकीन्ही॥ऐसीबुद्धिदयाकरिदीन्ही
मोकोंयोगसिद्धांतसुनायो॥योपूछोसोऊतरपा
यो॥अबप्रभुसांख्यसुमोहिसुनावौ॥ [illegible]
वसनेहहियावढाय॥गुरुदेवकृपाकरिकहिये
॥३॥विनऔरकसोकहतलहिये॥ [illegible]
चौ॥सोरठा॥शिष्यकहौसमुझाय॥जोतैंपूछौ
प्रीतिसौं॥सांख्यसुदेउबताय॥तसुनिवेकौजो
गहै॥ [illegible] ॥सुनि
शिष्यसुहैमतसांख्यहिकोजुअनातमआतमभिन्नक
रैआतमहैयउरूपलियेनितआतमचेतनभावधरै
॥अनआतमसूक्ष्मथूलसदासुनिआतमसूक्ष्मथूल
मानै

वृस्यत्सगुरूपरसगांधपंचतत्त्वबनिहैसिवि
रहैअरुचकमजानितू सांख्यसुमतऐसेकहै
यहकहिसुम
वस्तुवानिकोकहियेद्रव्यचउद्दकहिजानिअपुनि
जन्मसुनावअग्निमहिवरतयचलनपवनपाहै
चाहिआकाससुनावडुथिरुकहियतहैसुनिअ
वफेशालयावै एवंचलतकेपंचसुनावहि स
जुरविनानपावै
अथराजसअहं
कारलजयजोहराइयसुवताके पुनि पंचबाय
तिनकेसमीपहीयहब्योरोसमझोके अरुतिनि
त्रिहिहैक्रियसुतिनकी भिन्नभिन्नहैनामसु
कहिशिष्यकहौनीकेकरितोसो ज्योपावोविस्त
मं
अवसुनुपांइगगुणरस
नपुनितिनकेसंगजानसुइंद्रियपंचप्रईअपु
यनेरगावाक्यपानिअरुपादउपस्थगुदाहकोहि

सेकम्रिसु इंद्रिय पंचैं मा ली विधि जानें रहिऐ सु
नि प्राण पानें व्यानोदान सु वायु है इस पंच र
जो गुण तें भये क्रिया सक्ति को पद्यु है
[illegible]

अथ सात्विक फल कर मन बुद्धि चित अहंकार
पंच इंद्रिन के अधिष्ठाता देवता वरुण दिग रविप
लमारुत अर्क अस्व निवर्ण ज्ञान सु इंद्रिय पुनि अ
ग्नि इंद्र उपेंद्र मित्र जु प्रजापति कर्मेंद्रिय
सासौ विधि अरु के चन्द्र पुनि रुद्र इस तिर पति
नि [illegible] र ब्रह्म रुद्र सो देवता ज्ञान सक्ति युत जानि
इति सात्विक सर्ग        त्रिविधि स
हे गुण सदा तम रज सत्व सय एह संस्कारि पिंड स्थू
ल है इनि कारि सूक्ष्म देह कारण देह सु ती
सरो सब कौ कारण मूल ताहा तें घि [illegible] एक
सूक्ष्म देह स्थूल [illegible]
[illegible] व्योम वायु पावक जल पृथ्वी
न ही कौ वरणी एक तत्व मांहि

६ स्थिरअवनितकूउदककहि
पंचपचीससनोऊं
जानऊ मांसअगनीकों पहिचानऊ नाडीवाय
रोमअकासपंचअंसपृथ्वीऊप्रकास भेद
अवनिमुत्रजलकहिए रक्तअगनि यहजानैरहिए
सुक्लसुवायस्लेख्मव्योम पंचअंसएउदककेरीमोमं
ह्रैतृष्णाद्रुजलकोअंसा आलसअगनन
आनकुसमासंगमवायुनीदन मजान पंचअंसए
अगिनिप्रमान रोधयोंनिभ्रूमूत्रजलमाही उर्ध
गमनअगिनिमहिआहीं आतिनिगमदेवायपहिचान
ऊ उच्चस्थितिआकासहिजानऊ मयपञ्चमि
हादिकनीर क्रोधअगिनिपुनिकामसमीरलोभ
कासंकहिसमझाए पंचअंसएनभकेपार
प्रथमअनोभेदा
गुदाकर्मइंद्रियनिमाहि नासाइंद्रियज्ञान एहे
उपस्थकर्म
इन्द्रतेप्रगट सिषिलेऊपहिचानि एदोऊजलते
इंद्रियनिमाहि रसनाइंद्रियज्ञान चर्मकर्मइंद्रियनि
पेट सिषिलेऊपहिचान

महि लोचनइंद्रियज्ञान॥ एहोऊ दसते प्रगट॥ सिथि
लिकेऊ पहिचान॥२॥ पानि कर्मइंद्रिय निम त्विकु
इंद्रिय पुनि ज्ञान॥ एहोऊ पवनहि प्रगट॥ सिथिलेऊ
पहिचानि॥२॥ वचन कर्मइंद्रिन्य महि। श्रोत्रसु
इंद्रीयज्ञान॥ एहोऊ नभते प्रगट सिथिलेऊ पहिच
ना॥५॥२०॥ अथ अनि पुटी नंद॥ दोहा॥ श्रोत्रसु अध्या
त्म प्रगट श्रोतव्य अधिभूत दिसा तत्रहि देवत यह
रपुटी इहि सूत॥१॥ त्वक अध्यात्म जानियऊ सपर्श
है अधिभूत वायु तत्र पुनि देवती यह त्रपुटी इहि सूत
॥२॥ चक्षु अध्यात्म जानियऊ रूप व अधिभूत सू
र्य तत्रहि देवता यह त्रपुटी इहि सूत॥३॥ रसना अध्यात्म
प्रगट रस ग्रहण अधिभूत॥ वरुण तत्रहि देवता यह त्र
पुटी इहि सूत॥४॥ घ्राण सु अध्यात्म प्रगट घ्रातव्य अ
धिभूत अस्विनी हि देवता यह त्रपुटी इहि सूत॥५॥इ
ति पंचज्ञान इंद्रिय त्रपुटी॥ वचन सु अध्यात्म प्रगट॥
वक्तव्य अधिभूत अग्नि तत्रहि देवता इहि
हि सूत॥१॥ हस्त सु अध्यात्म प्रगट॥

इतत्रेहदे

त ... चर्मे हस्तअध्यात्मप्रगट

वता यहस्फुटंइहिसूत ...

गंतव्यअधिभूत विष्णुत त्रेहेदेवता यहस्फुटंइ

सूत ... उपस्थअध्यात्मप्रगट आनंदअधिभूत

प्रजापतितेहिदेवता यहस्फुटंइहिसूत ... गुदा

हस्तअध्यात्मप्रगट मलत्यागअधिभूत मित्रतत्रेहेदे

वता यहस्फुटंइहिसूत ...

मनअध्यात्मजानियइ संकल्पअधिभूत चंद्र

तत्रेहेदेवता यहस्फुटंइहिसूत ... बुद्धिसुअध्या

त्मप्रगट बोधव्यअधिभूत ब्रह्मातत्रसुदेवता य

हस्फुटंइहिसूत चितसुअध्यात्मप्रगट चितव्य

अधिभूत वासुदेवतत्रेहेदेवता यहस्फुटंइहिसु

अहंकारअध्यात्म अहंकृतिअधिभूत रुद्रत

ता ...

त्रेहेदेवता यहस्फुटंइहिसूता ...

॥अथलिंगसरीरकथ्यते॥

... लिंगप्रवधासदस्परोक्ष

... नवतत्तनिको

परसगंध मनअरुबुद्धिचित्तअहंकारा॥ सिनव
तत्वकोपरनिर्धारा॥ ॥ यहइहतत्वस्थू
लवपु नवतत्वनिकोल्यांग ९ निचोवीसऊतत्व
कोवऊविधिकह्योप्रसंग॥ ॥
सिघरचोवीसतत्वजडजानऊ तिनकोक्षेत्रस
कहिरपुनिचेतनिएकऔरपचीसहि सोरख्याहि
मतसोलहिए सोहैक्षेत्रज्ञअवकोप्रख पुनि
साक्षीवहजानऊ यहअकृतिपुरषकोकीयो
निर्णय सद्गुरुकहैसुमानऊ॥ ॥ अथजाग्रद
अवस्थाकथ्यते॥ ॥ यहदेहस्थूलविरा
टहैपंचतत्वकोठाटा नभवायतेजजलधरणी
पांचेवऊविधिकरिवरणी॥ ॥ जेसबदस्परसहि
रूपारसगंधमिलेतिनिजूपा ९ नितनमात्रिक
सहेता पंचविषयकोहेता॥ ॥ पुनिपंचेंद्र
यज्ञानी श्रवणादिमिलीविधिनांनां अरुकर्म
सुइंद्रयपंचा वचनादिमिलेजुप्रपंचा॥ ॥
मनबुद्धिचित्तअहंकारा यहअंतहकर्णविचा
रापुनिदेवचतुदेशगनऊ दसवायु

त [illegible] इतनेहैदे

वता यहस्फुटीसहिसूत [illegible] चर्णसुअध्यात्मप्रगट

गतव्य अधिभूत विस्नुत नहैदेवता यहस्फुटीसहि

सूत [illegible] उपस्थ अध्यात्मप्रगट आनंद अधिभूत

प्रजापति तहिदेवता यहस्फुटीसहिसूत [illegible] गुद

सुअध्यात्मप्रगट मलत्याग अधिभूत मित्र तहैदे

वता यहस्फुटीसहिसूत [illegible]

मन अध्यात्म जानिये संकल्प अधिभूत चंद्र

तहैदेवता यहस्फुटीसहिसूत [illegible] बुद्धिसुअध्या

त्मप्रगट बोधव्य अधिभूत ब्रह्मा तहसुदेवता य

हस्फुटीसहिसूत चितसुअध्यात्मप्रगट चितव्य

अधिभूत बासुदेव तहैदेवता यहस्फुटीसहिसु

[illegible] अहंकार अध्यात्म अहंकृति अधिभूत रुद्र

नहैदेवता यहस्फुटीसहिसूता [illegible]

[illegible] ॥ अथ लिंगसरीर कथ्यते ॥

[illegible] नवतत्व कौ लिंगप्रबंध सब्द स्पर्श रूप

परसगंध मिनअरु पुनि ये दश अहंकार॥ इन दव
तत्वको पनिधारा॥ ॥ यद्द तत्वस्थू
लवपु नवतत्तनिको ल्याग ॥ इनि चौवीसऊ तत्व
को वऊ विधि कह्यो प्रसंग॥ ॥
सिषर चौवीस तत्व जड जानऊ तिनको है त्रत
कहिए पुनि चेतनि एक और पचीसहि सोरबा लि
मत सो लहिए सो है द्वैत्रत अभव को परख पुनि
सा ही वह जानऊ ॥ यह प्रकृति पुरुष को कीयो
निर्णय सद्गुरु कहै सुमानऊ ॥ ॥ अथ जाग्रद
अवस्था कथ्यते ॥ ॥ यह देह स्थूल विरा
ट है पंचतत्व को ठाट। नभ वायु तेज जल धरणी
या कै वऊ विधि करि वरणी ॥ ॥ जे सब्द स्पर्स हि
रूपा रस गंध मिले तिनि रूपा ॥ इनि तनमात्रिक
सहेता ए पंच विषय को हेता ॥ ॥ पुनि ये चेइंद्र
यज्ञाना ॥ श्रवणादि मिली विधि नाना ॥ अस कर्म
सुइंद्रय पंचा ॥ वचनादि मिली जु प्रपंचा ॥ ॥
मन बुद्धि चित्त अहंकारा ॥
रा पुनि देव चतुर है रानऊ

है सतरजात मूलु तमाहि ... [illegible]
मानहु ... करम सुभाव पुनि जीव स्व
वतीहि तहकालउकरमसुभाव पुनिजीव
स्पहि भाव सुकाल उपाइ पंच पाये ...
मैसु ज्ञानि मिलवै पुनि सुत्र सु रूप खमाने
सो पंच पउत्पकै ठाने है जीव सुचेतन कर्ता ज
उ सर्व पदार्थ धर्ते मिलि सर्वाहिन को संघाता
हे जागृत अवस्था ताता साग्रही विस्व अभिमानी
तत्व ब्रह्मा देव प्रमानी है राजस गुन अधिकारा
पुनि भोग स्थूल पसारा साकहि एन्द्र यन स्थाने
वाणी वैषर्य जानो यह जागृत अवस्था निर्णय सुनि
शिष्य सु प्रश्न वदनीय

पंचसु इंद्रिय ज्ञानं
दस वायु प्राणनागादिक कोहि तिन्कीव लिवपानं
पुनि पंचकरम इंद्रि जेन्हो अंतहकरण चतु
अरु पंचविषय सब्दादिक ज्ञानकु ... सवइंद्रीय
... तिन ताही ...

संतमय ( यहका लऊ को स्थ नावे सकलानीत
गसरीरकहावे सिवनादहिण्यगर्ग पुनिताकोत
जोमयतेनपावे ग्रव सुप्रग्र वस्थाताकोकहि
र सातेजसग्रामिमानी तहसत गुण विलदेवत
जा एकजोगवासनातनी ॥२॥ पुनिकं ८स्थानम
ध्यमावाचा जीवात्मा समेत शिषसुप्रग्रवस्थाकी
योनिर्णय समा ६ दवियहात ग्रंथ

ह, प्रेमकाण देहतत्व लवहात
हलीनं लिंगसरीरनरहे घोरनिद्राव मवीन प्र
ज्ञाग्रे सिदानी ग्रयाकृतजुताग्गुणरूपा इदरत
हदेवताजीन ग्रानंदलीरूपा प्रतिपत्यतीवाणी
गुप्तहदवस्थानकजानिवे यहकहतजुरुमोल
ग्रवस्थासिध्यसत्यकरिमानिये

तुरीयावस्था चेतनतत्व

त ५

तमुक्त

[illegible] ईश्वर [illegible]
[illegible] निवारक रै [illegible]
[illegible] मानते हैं [illegible]
[illegible] नहीं [illegible] जानै
[illegible] तानको साक्षी रहै [illegible]
[illegible] मारे
[illegible] लि
[illegible] सब आप है [illegible]
[illegible] सांख्यके सिद्धांत जानते हैं
मोक्ष [illegible]

है [illegible] मे को जानते हैं
[illegible]
[illegible] कर्ता [illegible]
[illegible]
[illegible] निवारे [illegible]

आसंका॥ यहअवतुमतेजैहैकी जेतुमतीनासिद्ध
तवघाने तेप्रभुमेकैफरिजाने अवतुमतुरियातन
वताव कु तापीछै अहीतसुनावकु तुमबिनअवत
हैनाहिकेई तुमहीतेतुमहीसाहो॥ [illegible]
[illegible] ॥ साधुसाधुशिषधन्नि मनीप्रनत
कीनैनायाकोउत्त अवक्रद्वदतमिट प्रथम
[illegible] श्रवणमननकोघातेनीके निदिध्या
सनुनिजानपौटीकै अवसाक्षात्कारकुतो बतन्दू
हरनहिकोई [illegible]
तुरियासाधनवन्नयोहि तुरियातीतनि [illegible]
हैतरहेनकोई [illegible] [illegible]
पकछुअनुभवतोनहि [illegible] नहि [illegible]
सविषयुनि विश्वरूतत [illegible] [illegible]
तुरियानहिदोरात यातेन [illegible]
रतेहरपरतेघरेअतिस्पष्ट [illegible]

यपैसैंको वैनहीं [illegible]

प्रमके रहैं [illegible]

[illegible] भिन्न भिन्न करि अथ वेतांकुं

[illegible] तुरभाव [illegible] जो निःसंदेह सो है अब जे

[illegible] होता है सब ही प्रागभाव [illegible] सिध प्रागभाव सो प्रथम [illegible]

[illegible] जो कुं पुनि अन्योन्याभाव

काहिए नीकी विधि सम [illegible] प्रध्वंसाभाव तीसर

दूसरो सो कृतो है सिनो कुं अस्तस्तुनि [illegible] अत्यंताभाव है जानो है

ताको कहो विचारा जब चतुरभाव

तब कछु टेक मसारा [illegible] प्रागभाव

मृत्तिका मांहि भाव घटनि को [illegible] विधि अन्यो

यह जानि रहाय ता मृत्तिका के जनक विधि [illegible] यह

अन्याभाव गहाय मृत्तिका मध्य लीनता सह [illegible] है व

प्रध्वंसाभाव लहाय न कछु नयो न अब नहि के [illegible] पूर्व प्रागभाव वनन

ह अत्यंताभाव कहाय [illegible] पहले जब कोउ वन होतो प [illegible]

[illegible] जैसें कोउ नर

एक है अप [illegible] विस्व को अभाव है [illegible] कछु इतर

हनस्तु लय अति दिपियत तिन मैं तौ न [illegible] रसिक चन विसेषि

यतंतासुमध्यनहीकछुभूषनपूरभयौहै।जैसैंनभमा
हेपुनिवादरनजानियतसुंदरकहतसिष्यईहैप्रग
भावहै॥६॥ अथ अन्योन्याभाव॥ सवैया॥ एक
भूमितेभाजनवऊविधि कूंडाकरवाडियामाट।च
पनीढकैंडनसरावगगरियाकलसकहालीना
नाघाट। नामरूपगुननजूवाजुवा। पुनिविवहार
भिन्नहीठाट।सुंदरकहतशिष्यसुनिअैसैंअन्योअ
न्याभावविराट॥५॥ मनहर॥ एकभूमिकोवि
कारकंचनकहावतहै।ताकेविविधभांतिभू
षनअनतहैमुद्रिकाकंकनकंठमालासीसफूल
पुनिकुंडलवलयहदुघंटिकागनतहैनामरूप
गुनव्यवहारसबभिन्नभिन्नअंगअंगआपुनीहा
नेनेतहै।अैसीभांतिशिष्यसुनिसुंदरकहततातोहि
विडषरकैअन्योन्याभावयोंजनतहै॥ सीप
ई॥सिष्यएकभूमिकोतामविकारी
नकहाव।

तावहि हैनो मद्दपगुन भिन्न भिन्न होहि सोहाव थावपु
कारा यऊअन्यामावद्दुतेहि र वकूल भाविस्तारा
लोहाप्रगटहुहै विपर सोक
मि [illegible] विकार विविध भांतिता केनये जगतमाहि
हथियार गुरजसमसेर कटारी व छुरी बुगदा मा
लिकतरनी छुरी संवारी मा मद्दपगुन भिन्न भिन्नह
जहांजैसो तहं सोहा अन्योअन्यामावहि ष्य
रकैलोहा मूमिविकार प्रमम
योनानाविधि द्रसे पासा मल मल सहनसिता
निपजाहि सरसै सिरीसाफवा फल अन्तरमैर
वकोहि र परकालाग्रह गजी गनत करवीरव
लहिर सुनिसिष्य कहालोवरनियहि अंतनहीनि
सदिनकहै इहि अन्यो अन्यामावते काटिकापयउ
घिलहै पुनि एक भूमिविकारत
रुविस्तार रुवकूअविधि देषिर जरमूलसाषापत्र
पुष्पफलअनेकानपेषिर तिहिनाममद्दपगु

नउ मिल्रहि वक्रतम्रांति दषांनिये ॥ सो म्रावग्र
न्यो अन्य कहिये सिष्य निस्त्र समांनिये ॥
॥ जल विकार अवस्तु नऊ ॥ फेन वुदबुद तत
रंगा ॥ बोला पाला जानि स्रुती जलही को अंग ॥ अ
ग्नि विकार मसाल चिराक ऊदीप कजीप ॥ वावि
कार हि जानि ॥ व घूरा आंधी होइ ॥ आकास वि
रसु अभ्र है ॥ तैनानां विधि देषिये हि ॥ यह अन्यो
अन्या म्रावसिष्य पंचतत्व मय पषहि ॥
रक ब्रह्म का एं जगत ॥ काये है वक्र म्रांति
चारि षानि विस्तार यह ॥ चौरासी लष जाति ॥ अ
थ प्रध्वंसाभाव ॥ ॥ यऊ भूमि
र भूमि महि लीन ॥ जल विकार जल मांहि ॥ पुनि
तेज विकार तेज महि मिलिहै ॥ वाउ वायु मां
ही ॥ आकास विकार मिले आकास हि ॥ का एर
निरालंब मि मयह प्रध्वं सा म्राव सुक

जोजोनिष्पति

सोठहरांनै जगतसब होस्व

सोताहीमेंछीन जैसेठीयह जगत

लमेंलीन

मन इछाहीन प्रकृतिनमह

दिवो मनआदिको

ततग्रहंकारत्रिगुणनसब्दादि

हे श्रुवणादिवचनादिदेवतान मन आदिस

दमनस्थूलपुत्रियेकहीनदी है स्वेदजनग्रंडज

जराय्युजनउदभिजयसुहीनयहीहै सुखदृ

नजोईहै सुंदरकहतबुमज्यो कोत्योंहीदेषिय

तानतोकछुभयोग्रहेनकहै है

कहतसाकेसिंगग्रापिकिनहनांहिदेषे तो

बहुरिकुसमग्राकाशतोकाहुनांहिपर जल

हीबंध्यापुत्रापिधूरैसूलतकोहिप रजुमांहिसपनांहि

हैनौरकहंदूठतनाहिलहिप रजुमांहि लगतहै लिखदहै

कि रजतसोलगत

त्यंताभावस्तु निश्चै सेंही सर्वजगत है ॥२५८॥
छं॥२॥ सिष्यप्रश्न अत्यंताभाव हो १ नहि उत्पति स्थिति
प्रलय देके १ नहि आदि न अंत न मध्य भाव॥ न
हि भ्रम भ्रेतिन को उपाव॥२॥ नहि कारण कार्य
है उपाधि॥ नहि ईस्वर जीव परे समाधि॥ नहि तत्त्व
तत्व विभाग भिन्न॥ नहि जाति अजाति कहूं न चि
न्ह॥३॥ नहि काल न कर्म स्वभाव आदि॥ नहि विद्य
विद्या लगी काहि॥ नहि राग विराग न बंध मुक्त॥
नहि रूप अरूप अजुक्त जुक्त॥४॥ नहि अहि प्रमा
ता को प्रमाण॥ नहि है प्रमेय नहि प्रमायाण॥ न
हि लय वहे पन निकट दूर॥ नाहि ह्रस्व न रजन
चेद्दूर॥५॥ नाहि स्थूल न कृस्न न रक्त पीत नाहि
कस्व न दीर्घ घाम सीत॥ नहि अर्थ न धर्म न काम
मोक्ष॥ नहि पाप न पुन्य अप्रोक्ष प्रोक्ष॥६॥ नहि स्व
र्गादिक नहि नर्क वास॥ नहि त्रा-

हिं वर्णाश्रम नहिं स्मृति चाल ।। नहिं संध्यास्तु
त्र न कर्म न्यास नहीं मन जप तप व्रत उपवास नहिं
मुद्ध पाप न ...र कोइ नहिं निर्गुण सगुण भेद
होइ ।। नहिं सेव्य न सेवक सेव कीन नहिं हेत
न प्रीति न प्रेम लीन ।। नहिं नवधा दृढ साधा परम
त्ति ।। नहिं सालोक्यादिक चारि मुक्ति ।। नहिं सा
धक साधन साध्य सार ।। नहिं सिद्धि नासि इन नि
र्विकार ।। नहिं कर्ता कर्म न क्रिया कोर ।। नहिं दृष्ट
सैन दृश्य आहार ।। नहिं व्यक्त अव्यक्त न स्थूल
सूक्ष्म नहिं रक्त विरक्त न बुद्ध शुद्ध नहिं तर्क वित
र्क अधार धीर ।। नहिं शून्य अशून्य रघुवीर ।। नहिं
चित अचित अडोल ।। नहिं माप अमाप न तोल
तोल ।। नहिं कृश स्थूल नहिं ज्वा वा वाल नहिं दी
जु राम त्यन अकाल काल ।। नहिं जाग्रदस्व
प्न सुषुप्ति ।। नहिं तुरिया त्रय साक्षी मात्र

ष्य नहिजैसानहिःनगम्य नहिःध्येध्यातानहिः
ध्यानरुप्य॥१२॥छं०॥जोकछुसुनियेपिथेवु
धिविचारैजाहि।सोसबबारैवृत्तासहै अमक
रिजानकताहि॥१३॥यहत्र्प्रत्यातात्मावहै यहईतु
रियातीतयहअनुभवसाक्षातयह यहनिश्च
यग्रहीत॥१४॥नाहीनाहीकरिकह्योहैहैकह्यो
वषानि।नाहीहैकैमध्यहै सोअनुभवकरिजा
नि॥१५॥यहहैहैपरियहनही॥नाहीहैहैनाहिःव
हईयहईजोनित यहअनुभवयामहि॥१६॥अव
कछुकहिवेकोनही कहेकहोलौवैन॥अनुभव
हीकरिजानियें यहमूंगेकीसैन॥१७॥जोतैरैसं
देहकछु रह्योरंचहूहोइ॥तोसिषअजहूप्रश्न
करि।फेरिसमझोतोहि॥१८॥इतिश्रीपरब्रह्म॥
चौपरब्रह्मेःहैस्वामिन्नूसंश

तुप्रकारैसोवंतजागेयो अवतौसर्वेषुप्रकारेजा
नेस्वयममसंदेह विलान्यो
वाहेक्कलं क्वचसंसारः क्वचपरमार्थ क्वचव्यवहा
रः क्वचमेजन्मं क्वचमेमरणंः क्वचमेकर्ताः
क्वचमेअद्वयः क्वचमेद्वैतंः क्वचमेनिर्णय
क्वचमेभ्रांतं क्वचमाया क्वचब्रह्मविचारः क्व
चमेप्रवृत्तिर्हिनिवृत्तिकारः क्वचमेशान्तंः क्व
चविज्ञानं क्वचमेमनंहि विषयविषज्ञानंः क्व
मेस्माक्ष क्वचविस्मृतं क्वचमेतत्वं क्वचहिअत
तं क्वचमेशास्त्रं क्वचमेदुःखंः क्वचमेसु
स्तिहिनास्तिहिपक्षः क्वचमेकालः क्वचमेदे
शः क्वचगुरुसिष्यः क्वचउपदेशः क्वचमे
ग्रहणं क्वचमेत्यागः क्वचमेविरक्तिः क्वचमेर
... निस्पंदः क्वचमेद्वंद्व

क्वचांन्नेर्ह्ह क्वचमेवात्मात्म्यंतरन्नासः क्वच
ग्रंधः द्वैतियेप्रकासं क्वचमेनाडीसाधन
जोगः क्वचमेलत्तविलैविड्योग॥२॥ क्वच
नानात्वं क्वच एकत्वंः क्वचमेस्तन्यापूंन्यस
मेत्वयोश्रवसेषंसोमारूत्पंः वहुनाकिंउक्तं
चअनूपं॥७॥४॥ दोहा॥ यहमेश्रीगुरदेव
कोअनुभवकलैपुनाह॥ जोप्रभुकोपरिश्र
मकीयोःसोफलप्रगट्योआइ॥४१॥ श्रीगुरुउ
वाच॥ चौपई॥ हेसिषजोइन्नाकरिसोइते
हिनकतहुवाधाहोईः तनिधूंमचयोनिदोंष
तैंअवणायोजीवनमोष॥४२॥ जोमेंकह्योसुहृ
दयआन्योः ताहीक्रमतेंव्रह्महिजांन्योःआपु
वलयगभेदमिटायोः ज्योंहैत्यूंहीनिस्चयआ
यो॥४३॥ देवैपुनेस्यर्सयवोलेसंघय

यकहैडोलै ॥ मानपानवस्त्रादिकजोई यहप्रा
हैरकोहोइ ॥ निरालंबनिर्वा
ना रच्छा चारी पहरांस्कारपवनहिफिरै मुख
पराज्यूहै ॥ जीवनमुक्तकारोहैतत्त्लिप्तनप
वकैहोइ तौकै सोईजानिहै तौवरमानजेके
चौथा ग्यानसमुद्रमांहि डुबकीमारैआइ
सोई मुक्ताफलल्है डुबहरिडुबसबजाइ ॥ सुंदर
ग्यानसमुद्रकीमांहिमा कहि एकौन अंम्रतरस
सौहैमरछौ दुमदजिनिजानकैलौन ॥ सुंदरस
नसमुद्रमांहिवकतेरनत्रमोल मतकेहोइ
सोपैठिहै पैठिनसकैईलोल ॥ सुंदरज्ञान
समुद्रको वारपारनहिअंतविषईनागैजु
किकैपैठैकोईसंत ॥ सुंदरग्यानसमुद्रकोजे
चलिआवैतीर ॥ हैमतदीसुखउपजैहै

जलगंभीर ॥३॥ यह ईज्ञानसमुद्र है [illegible] गुरु
शिष्यसंवाद ॥ सुंदरयाहि कहे सुनैं ॥ ताके [illegible]
हि विषाद ॥ ८ ॥ इति श्री सुंदरदासेन विरचिते
ज्ञानसमुद्र ग्रंथे तत्त्व सिद्धांत निरूपण [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] जातिरथ ॥ कोदा ॥ [illegible]
ति ॥ २७ ॥ कहे ॥ ८ ॥ [illegible]
॥ पंचमोल्लास जाति ॥ [illegible] ॥ सर्व [illegible]
॥ २०६ ॥ [illegible] ग्रंथ [illegible] ४०

।।गुरदेव की[illegible]

।।रांमजी सत्य।। स्वयालिखतं।।गुरदेव दयाकरि सब

।।इंद्व छंद।। मौज करी गुरदेव दयाकरि सबद सुनाय कह्यो हरि नेरो।। ज्यौं रवि कै प्रगटैं निस जात सु दूरि कीयो भ्रम भानि अंधेरो।। काय कबाय कमान नसंकु करि हैं गुरदेव ही बंदि मेरो।। सुंदरदास कहै कर जोरि जु दादूदयाल कौं हूं नित चेरो।।१।।

।।पूरणब्रह्म बिचार निरंतर काम न क्रोध न लेस दिषावत।। ...न तमो है।। श्रोन हत्या रसना अरु घ्राण सु देषि नमो है।। ज्ञान स्वरूप अनूप निरूपण कहूं कंउं नैन न नमो है।। सुंदरदास कहै ...आस गिरा सुनि मो रन मो है।। सुंदरदास कहै कर जोरि जु दादूदयाल हि मोर नमो है।।२।।

।।धीरजवंत अडग जितेंद्रिय निर्मल ज्ञान गह्यो दृढ आद।। सील संतोष छमा जिन कै घट लागि रह्यो सु अनाहद...